Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XV, July-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

आधुनिक हिन्दी दलित विमर्श तथा मुन्शी प्रेमचन्द की कालजयी दलित कहानी एवं उनके पात्रों का अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XV, July-2014, ISSN 2230-7540

आधुनिक हिन्दी दलित विमर्श तथा मुन्शी प्रेमचन्द की कालजयी दलित कहानी एवं उनके पात्रों का अध्ययन

Jyoti Gupta

Research Scholar, Sai Nath University, Ranchi, Jharkhand

----------X----------

प्रस्तावना

कोई भी साहित्यकार युगीन परिस्थितियों से निश्चित रूप से प्रभावित होता है, लेकिन उसके व्यक्तिगत जीवन की घटनाएं भी उसके साहित्य पर अनजाने में ही अपनी प्रतिच्छाया डालती है। प्रेमचंद साहित्य भी इस तथ्य का अपवाद नहीं है। प्रेमचंद का जीवन काफी संघर्षमय परिस्थितियों में गुजरा। इन्हीं परिस्थितियों ने उनके जीवन को घटना संकुल बना दिया, जिससे उन्हें जीवन में संघर्ष करने का अदम्य साहस प्राप्त हुआ।

किसी भी कलाकार की कृतियों को अथवा साहित्य की रचनाओं को पढने से पूर्व हम यह ज्ञात करना चाहते हैं कि उस कलाकार अथवा साहित्यकार की रचनाएं किस प्रकार की होंगी या उसने समाज के कौन से पहलू को छेड़ा होगा तो उस कलाकार के घर के बारे में, उसके जीवन के बारे में और किस वातावरण में रहकर उसने साहित्य रचना की होगी, इन सब बातों का अनुमान हमें उसकी रचना को पढ़ने से पहले ही लगा लेना चाहिए। क्योंकि कोई भी कलाकार, साहित्यकार अथवा चित्रकार अपनी कृतियों में, रचनाओं में और चित्रों में अपना व्यक्तित्व लाये बिना नहीं रह सकता। जब कोई सफल कलाकार अपनी कृतियों में यथार्थ का चित्रण लाये बिना नहीं रह सकता या यूं कह सकते हैं कि अपने आस–पास के वातावरण से प्रभावित होकर मानव–जीवन के बहुत समीप नहीं जाता। तब तक वह सफल कलाकार नहीं बन सकता।

प्रेमचंद जी का घर अथवा परिवार बहुत ऊंचा या सम्पन्न नहीं था। वे निर्धन परिवार से संबंधित थे और जैसा उन्होंने स्वयं कहा है :

'मेरा जीवन सपाट, समतल मैदान है, जिसमें कहीं–कहीं गड्ढे तो हैं, पर टीलों, पर्वतों, घने जंगलों, गहरी घाटियों और खड्डों को स्थान नहीं है। जो सज्जन पहाड़ की सैर के शौकीन हैं उन्हें तो निराशा होगी।'

जन्म एवं बचपन : –

प्रेमचंद का जन्म शनिवार 31 जुलाई, 1880 को एक निम्न–मध्यमवर्गीय परिवार में बनारस से पांच मील दूर लमही गांव के कच्चे पुश्तैनी मकान में हुआ। उनके पिता अजायबलाल श्रीवास्तव डाक मुंशी थे। उन्होंने पुत्र का नाम रखा 'धनपतराय' और ताऊ ने 'नवाबराय'। हिंदुस्तान की नई जनवादी, राष्ट्रीय चेतना का प्रतिनिधित्व करने वाले और अपने साहित्य में निरन्तर सामाजिक रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों का विरोध करने वाले इस महान साहित्यकार के जन्म के साथ भी एक रूढ़ि जुड़ी थी। प्रेमचंद का जन्म तीन लड़कियों के जन्म के बाद हुआ था, ऐसा लड़का तेंतर कहलाता है। और ऐसी संतान के विषय में यह विश्वास किया जाता है कि वह मां बाप को खाए बिना नहीं रहती। (इस रूढ़ि को नकारने के लिए प्रेमचंद ने 'तेंतर' नामक कहानी लिखी थी।

प्रेमचंद के उपन्यास –

प्रेमचंद जी के उपन्यासों में आने वाली समस्याएं अधिकतर सामाजिक ही हैं परन्तु उनका रूप इतना बड़ा है कि उनमें वैयक्तिक नागरिक, ग्रामीण, राजनीतिक अथवा आर्थिक सभी प्रकार की समस्याएं आ जाती है। प्रेमचंद जी का एक–एक पात्र एक–एक समस्या को लेकर एक वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करता है। उनके उपन्यासों में उभरी समस्याएं :–

प्रतिज्ञा –

लेखक पर आर्य–समाज का प्रभाव दिखाई देता है। विधवा उद्धार से प्रारम्भ करके लेखक विधवाश्रम की स्थापना तक का सफर तय करता है।

निर्मला –

प्रेमचंद का बहुचर्चित उपन्यास है। जिसमें दहेज का कुपरिणाम, अनमेल विवाह तथा उसके कारण हुए सर्वनाश की समस्या है। निर्मला का विवाह मुंशी तोताराम से हो जाता है, जिसके तीन लड़के होते हैं। पहला लड़का मुंशीराम मर जाता है। दूसरा आत्महत्या कर लेता है। तीसरा साधुओं के साथ चला जाता है। इस सर्वनाश से निर्मला भी नहीं बच पाती।

सेवा सदन –

सेवासदन नारी समस्या को लेकर लिखा गया उपन्यास है। इसमे भी अनमेल विवाह, वैधव्य जीवन एवं वेश्या जीवन की समस्याएं ली गई हैं। इस उपन्यास की मुख्य पात्र सुमन 'भोली' नामक वेश्या से प्रभावित हो जाती है। एक बार सुमन कह उठती है : वह स्वाधीन है, मेरे पैरो में बेड़िया है। उसकी दुकान खुली हुई है मेरी बंद है। वह स्वच्छन्दता से डालियों पर चहकती है ओर मैं पिंजरे में बंद तड़पती हूं। उसने लज्जा त्याग

www.ignited.in

दी और मै उसे पकड़े हुए हूं। अन्त में सेवासदन का भार सुमन संभाल लेती है।

रंगभूमि –

लेखक गांधीवाद से प्रभावित है। औद्योगिकरण का विरोध किया गया है। एशिया में सर्वत्र मशीन का विरोध हुआ था। इसी के परिणामस्वरूप गांधीजी ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग और उपभोग पर जोर दिया था।

कर्मभूमि –

कर्मभूमि में प्रेमचंद ने सामूहिक चेतना लाने का प्रयास किया।

गोदान :–

किसानो की समस्या को उजागर करने वाला उपन्यास है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र होरी है। वह किसान से मजदूर बन जाता है।

प्रेमचंद कहानीकार के रूप में

साहित्य में प्रेमचंद का आगमन एक युगांतकारी घटना थी। प्रसाद प्रेमचंद से पहले ही हिंदी कहानी में आ चुके थे। प्रेमचंद भारतीय कहानी के अत्यंत सामर्थ्यवादी व्यक्तित्व थे। '' वे कहानी को स्वप्न–जगत से निकाल कर वास्तविक जगत में लाते है और उसके विषय को सामाजिक तथा कथावस्तु को विश्वसनीय बना देते है।'' (प्रेमचंद एक विवेचन : इंद्रनाथ मदान) प्रेमचंद यथार्थवादी कलाकार थे। उनकी रचाना दृष्टि समकालीन जीवन–सत्यों से निर्मित हुई। उनके कथा साहित्य में जनजीवन की खूबियों और खामियों के चित्रण से यह साफ जाहिर है कि उन्हें अपने समय और समाज की हरेक धड़कन की गहरी पहचान थी। ऐसी पहचान युगों के बाद किसी लेखक में जन्म लेती हे। उनके अंतर्मन में अपने देश के गरीब, शोषित एवं पीड़ित लोगों के प्रति गहरी तड़प एवं सहानुभूति थी। इसलिए उनके साहित्य में जन जीवन की खूबियों और खामियों के चित्रण से यह साफ जाहिर है कि उन्हें अपने समय और समाज की हरेक धड़कन की गहरी पहचान थी। ऐसी पहचान युगों के बाद लेखक में जन्म लेती है। उनके अंतर्मन में अपने देश के गरीब, शोषित एवं पीड़ित लोगों के प्रति गहरी तड़प एवं सहानुभूति थी। इसलिए उन्होंने अपने कथा–साहित्य में अनेक वर्गो के पात्रों, उनके पारस्परिक आर्थिक संबंधों, परिस्थितियों और अंतर्विरोधों, समस्याओं एवं परेशानियों , मनः स्थितियॉ एवं क्रिया–कलापों को बेहद आत्मीयता के साथ अभिव्यक्ति दी है। प्रेमचंद की कहानियां बेचैनी, टकराहट एवं संघर्षशील परिस्थितियों एवं प्रसंगों के द्वन्द्व से उपजी है, जिनमें महानता के स्थान पर साधारणता की प्रतिष्ठा हुई है।

प्रेमचंद की कथा–यात्रा के तीन पड़ाव है– पहला, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का है, जहां उनकी रचनाओं में कोई न कोई आदर्शात्मक बिन्दु यथार्थ की यात्रा के जरिए स्थापित होता है। दूसरा पड़ाव उनकी रचनाओं में दिखलाई पड़ता है जहां वे जीवन – यथार्थ को विचार के स्तर पर जीते है और उसी विचार को रचना में उड़ेलते है। तीसरा पड़ाव वह है, जहां वे आदर्शात्मकता के आग्रह से मुक्त होकर संलिप्त सामाजिक यथार्थ की एक प्रामाणिक पहचान उभारते है।

प्रेमचंद की कला का स्त्रोत भारतीय जनता थी। इसलिए वे ऐसी कहानियां लिख सके, जिनमें जनता ने अपने जीवन की झलक देखी। समाज की पीड़ित विधवाएं, सौतेली माताओं से परेशान बालक, महंतों और पुरोहितो से ठगे जाने वाले किसान, दूसरों की गुलामी करके भी पेट न भर पाने वाले अछूत, महाजन का सूद भरते जिंदगी गारत करने वाले किसान तथा दूसरों की गुलामी करके भी पेट न भर पाने वाले अछूत, महाजन का सूद भरते जिंदगी गारत करने वाले किसान तथा इस तरह के अन्य सभी लोग कहानीकार प्रेमचंद में एक अच्छा दोस्त पाते है। समाज के अन्यायी और अत्याचारी, निठल्ले और मुफ्तखोर, अंग्रेजीराज के वफादार, मददगार प्रेमचंद में वह अपनी असली सूरत देख सकते है, जो जनता के पक्ष लेने वाले एक सजग साहित्यकार में होती है।'' (प्रेमचंद और उनका युग : डा0 रामविलास शर्मा)

प्रेमचंद जी सही अर्थो में जनता के साहित्यकार थे। उन्होनें मनुष्य को केवल मनुष्य ही समझा, देवता या ईश्वर नहीं। उनका मत था कि मनुष्य देवता बनने के लोभ में मानवता खो बैठता है। उन्हें मानव की महानता पर अधिक विश्वास था। उनका मत था कि मानव बुरा नहीं परिस्थितियां ही उसे बुर बनने को विवश कर देती है।

प्रेमचंद जी महात्मा गांधी के अनुयायी तथा गांधीवादी मार्ग के पथिक थे। वे केवल आदर्शवादी ही न होकर कर्मवादी भी थे। ग्रामीण जीवन ही दूसरे अर्थो में भारतीय जीवन है। उन्होंने गांव के एक–एक रास्ते की खाक–छानी, हर मंदिर और मस्जिद में जाकर अंधविश्वास और पाखंड को अपनी आंखों से देखा और उन्हीं छोटे–बड़े, धनी–निर्धन, सबकों अपनी तूलिका से सजाया और संवारा। प्रेमचंद की चर्चा करते हुए रामविलास शर्मा ने स्वीकार किया है ''तुलसी दास के बाद हिंदी में यह पहला बड़ा कलाकार पैदा हुआ था जिसकी रचनाएं अपनी भाषा के क्षेत्र में नहीं, सुदूर दक्षिण के गांवों में भी पहुंच गई थी।''

उपसंहार

प्रेमचंद जैसे रचनाकार ने समाज के हर उस पहलू को अपने साहित्य में जगह दी। जिसे अन्य रचनाकारों ने तुच्छ और महत्वहीन समझकर नकार दिया था। अछूत और दलित उन विषयों में से एक है।

'प्रेमचंद के साहित्य में अभिव्यक्त दलित संवेदना' विषय पर शोध के पश्चात् जो बातें निकल कर सामने आती है वे यह कि प्राचीन काल से ही समाज चातुरवर्ण में (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) पर आधारित रहा है। अतः भारतीय समाज जन्म आधारित था, ना कि कर्म आधारित अर्थात जिसने जिस जाति में जन्म लिया। उसे उसी जाति के नियम, कानूनों का पालन करना होगा। किसी भी प्रकार व्यक्ति अपनी जाति छोड़कर दूसरी जाति में नही जा सकता था। इसे देखते हुए ही डा0 अम्बेडकर ने कहा था कि ''भारतीय समाज उस बहुमंजिली इमारत की भांति है जहां मंजिले तो है परंतु सीढ़ियाँ नहीं है। वे जाति व्यवस्था के घोर विरोधी और समानता एवं न्याय के पक्षधर थे। शूद्र व अछूतों की दुर्दशा देखते हुए ही उन्होने अछूतोद्धार जैसे आन्दोलन का संचालन किया। प्रेमचंद की 'मंदिर' कहानी इस आंदोलन से प्रभावित होकर लिखी गई।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचंद एक विवेचन– डॉ. इन्द्रनाथ मदान

www.ignited.in

2. कहानीकार प्रेमचंद रचनादृष्टि और शिल्प – शिवकुमार मिश्र

3. प्रेमचंद भारतीय साहित्य सन्दर्भ – डॉ. निर्मला जैन

4. प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ – डॉ. एम. विमला

5. प्रेमचंद सम्पूर्ण कहानियॉ–1 – कान्ती प्रसाद शर्मा

6. प्रेमचंद सम्पूर्ण कहानियॉ–1 – कान्ती प्रसाद शर्मा

7. प्रेमचंद सम्पूर्ण कहानियॉ–1 – कान्ती प्रसाद शर्मा

8. प्रेमचंद सम्पूर्ण कहानियॉ–1 – कान्ती प्रसाद शर्मा

9. प्रेमचंद सम्पूर्ण कहानियॉ–1 – कान्ती प्रसाद शर्मा

10. प्रेमचंद सम्पूर्ण कहानियॉ–1 – कान्ती प्रसाद शर्मा

11. प्रेमचंद सम्पूर्ण कहानियॉ–1 – कान्ती प्रसाद शर्मा